स्नातक प्रतिष्ठा
द्वितीय खण्ड
प्रगतिवाद

31 SATURDAY MAY

दिनांक - 14-5-

1 APR 14

स्थापित मत यह जान लो कि राजनीतिक क्षेत्र में जो साम्यवाद है, दर्शन में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है, साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद के नाम से अभिहित की जाती है। उस विचार धारा से प्रभावित साहित्य रचना 1936 से प्रारम्भ मानी जाती है। यह वर्ष अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, इसी समय छायावाद जहाँ एक ओर अपने पूर्ण उत्कर्ष पर था, परंतु उसी समय से उसमें ह्रास भी प्रारंभ हो गया था। व्यक्तिवाद की जो व्यापक चेतना, लोकसंग्रह, आस्था और उल्लास का दर्शन प्रसाद, महादेवी, निराला और पंत में मिलता है वह नये कवियों में लोप सा हो गया है। उत्तरछायावाद युग में अनेक कवि प्रगतिवाद के जीवन दर्शन से प्रेरित हुए उनमें - नरेन्द्र शर्मा, शिवमंगलसिंह सुमन, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रांगेय राघव, त्रिलोचन सिंह, गिरिजा कुमार माथुर, भारत भूषण अग्रवाल, गोपाल दास नीरज, रामविलास शर्मा आदि महत्वपूर्ण नाम हैं।

01 SUNDAY

2014

2

प्रगतिवाद काव्यधारा की प्रमुख विशेषताओं व प्रवृत्तियों का वर्णन निम्नलिखित है —

प्रथम विशेषता – रूढ़ि-विरोध – इनमें कवि ईश्वर को कर्त्ता मानकर सांसारिक द्वन्द्व को सृष्टि के विकास का कारण मानते हैं। उन्हें ईश्वर की सत्ता, आत्मा, परलोक, भाग्यवाद, धर्म, स्वर्ग, नरक आदि पर विश्वास नहीं है। उनकी दृष्टि में मानव की महत्ता सर्वोपरि है, उनके लिए धर्म एक नशा है और प्रारब्ध सुन्दर प्रवंचना है। उनके लिए मंदिर, मस्जिद, गीता और कुरान आज महत्व नहीं रखते हैं।

द्वितीय विशेषता है – क्रांति का स्वर – प्रगति कवि क्रांति में विश्वास रखते हैं, वे पूँजीवादी व्यवस्था, रूढ़ियों तथा शोषण के साम्राज्य को समूल नष्ट करने के लिए विद्रोह करते हैं।

तृतीय विशेषता है – उनमें मानवता का स्वर – ये कवि मानवता की शक्ति में विश्वास रखते हैं, उसी का स्वर बिखेरते हैं। वे जाति-पाँति, वर्गभेद, धर्म भेद से मानव को मुक्त करके एक मंच पर देखना चाहते हैं।

[illegible] है। [illegible] है कि [illegible]
[illegible] में [illegible]
[illegible] का [illegible]
[illegible] को उपकरण रह गया है।

[illegible] धरती पर ही स्वर्ग की कल्पना करते हैं। जो कवि आशावादी हैं, वे जीवन [illegible] होते हैं। इनमें कल्पना और सपना [illegible] नहीं, [illegible] धरती को ही स्वर्ग के रूप में [illegible] में विश्वास रखते हैं। इस धरती से विषमता दूर हो जाए और मानवता का प्रसार हो जाए तो सचमुच यह धरती ही स्वर्ग से भी महान हो जाएगी। [illegible] इस काल के कवि इसी जीवन में विश्वास करते हैं और इसे ही श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं।

यही विशेषता इसकी कला में है। इसमें कुछ मिल गई है। प्रगतिवाद के जन आंदोलन के रूप के उभरा, इसलिए इन कवियों ने अपनी भाषा को बहुत [illegible]

Scanned with CamScanner

और जनभाषा के नजदीक रखा। आलोचक छायावाद को सामान्तवादी प्रवृति का द्योतक मानते हैं इसलिए इन्होंने उनके स्थान पर सहज उपमानों और प्रतीकों का प्रयोग किया। छंदों का अतिरिक्त कार्य के मुक्त छंद का सहारा लिया है

सातवीं विशेषता यह है कि उन्होंने जीवन का यथार्थ चित्रण किया था। इनमें समाज के यथार्थ चित्रण की प्रवृति मिलती हैं। पंत और निराला की कविताओं में इनके चित्रण देखे जा सकते हैं।

अंतिम और आठवीं विशेषता उनमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय चित्रण में देखने को मिलता है। ये कवि देश-विदेश में उत्पन्न समसामयिक समस्याओं और घटनाओं को अनदेखी करने की दृष्टि नहीं रखते हैं सम्प्रदायिक समस्याओं, भारत-पाक विभाजन, कश्मीर समस्या, बंगाल का अकाल, बाढ़, अकाल, बेकारी, चरित्र हीनता आदि का इन कवियों ने बड़े पैमाने पर चित्रण किया है।

Scanned with CamScanner

5

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रगतिवादी कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से एक राजनैतिक दल के विशेष साम्यवाद का प्रचार किया है, व्यक्ति के स्थान पर जनवाद की स्थापना की, जनता को सुख-दुख को वाणी दी तथा शोषित पीड़ितों की उन्नति के लिए जोरदार समर्थन किया

कुमार रजनीकान्त रंजन

15/5/20